International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 29-11-2025, Accepted: 28-12-2025, Published: 12-01-2026
Volume 8, Issue 1, 2026, Page No. 1-3

समकालीन सिनेमा और पर्यावरणीय यथार्थ: 'पुष्पा' फिलिम के संदर्भ में

निहाला वी पी[1], डॉ. अब्दुल जब्बार एम[2]
[1] शोध छात्रा, हिंदी विभाग, सरकारी आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज, कालिकट विश्वविद्यालय, केरल, भारत
[2] एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, फारूक कॉलेज (ऑटोनोमस) कालिकट, केरल, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijrh.2026.8.1.8001

सारांश
विष्व स्तर पर विद्यमान गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं में वनोन्मूलन (Deforestation) एक अत्यंत खतरनाक और चुनौतीपूर्ण मुद्दा है। इसके दुष्परिणामस्वरूप पृथ्वी को वैश्विक ऊष्मीकरण, जलवायु परिवर्तन, सूखा, पारिस्थितिक तंत्रों के क्षरण तथा जैव–विविधता के तीव्र ह्रास जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन चुनौतियों से निपटने हेतु विश्व के अनेक देशों ने विभिन्न उपाय अपनाए हैं, जिनमें वृक्षारोपण एक प्रमुख समाधान के रूप में सामने आया है। भारत ने भी वनों के पुनर्स्थापन और संरक्षण की दिशा में कई प्रयास किए हैं। किंतु इसी संदर्भ में वर्ष 2023 में पुष्पा जैसी फिल्म के नायक को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार दिया जाना एक गंभीर विरोधाभास को उजागर करता है। लालचंदन तस्करी जैसे पर्यावरण–विनाशकारी अपराध से जुड़े एक चरित्र का महिमा मंडन, एक ओर जहाँ राज्य द्वारा पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करने के प्रयासों के विपरीत है, वहीं दूसरी ओर यह सांस्कृतिक माध्यमों के माध्यम से पर्यावरणीय मूल्यों के प्रति प्रस्तुत किए जा रहे संदेशों पर भी प्रश्नचिह्न लगाता है।

मूल शब्दः पर्यावरण संरक्षण, वनोन्मूलन, वैष्विक ऊषमीकरण, जलवायु परिवर्तन, सूखा, जैव विविधता, IUCN रेडलिस्ट, वृक्षारोपण, हरित आवरण, प्राकृतिक संपदा, अवैध कटाई और तस्करी, पैन–इंडिया सिनेमा, पुरुषसत्तात्मक दृष्टिकोण, स्त्री और प्रकृति का शोषण, सृजनात्मक स्वतंत्रता

विश्व के अनेक देश वृक्षारोपण और हरित आवरण के विस्तार के लिए सक्रिय प्रयास कर रहे हैं। संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका, सऊदी अरब जैसे देश मरुस्थलीय क्षेत्रों में भी हरित चादर बिछाने और नए वन अथवा आवासीय पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण की दिशा में तत्पर दिखाई देते हैं। संयुक्त अरब अमीरात के पर्यावरणीय स्थिरता लक्ष्यों को आगे बढ़ाने और कर्मचारियों के बीच सामाजिक जिम्मेदारी की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए, उद्योग और उन्नत प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने ग़ाफ़ वृक्षारोपण की पहल शुरू की है[1]। दुबई नगर पालिका ने 2024 में 216,500 नए पेड़ लगाए, जिससे स्थिरता को बढ़ावा मिला और शहर के शहरी वातावरण में सुधार हुआ। इस उपलब्धि में पिछले वर्ष की तुलना में 17% की वृद्धि दर्ज की गई है, जिसमें औसतन प्रतिदिन 600 पेड़ लगाए गए हैं। वनरोपण और भूनिर्माण पहलों के परिणामस्वरूप अमीरात के हरित क्षेत्रों में 391.5 हेक्टेयर की वृद्धि हुई है, जो 2023 की तुलना में 57% की वृद्धि दर्शाती है। दुबई नगर पालिका ने घोषणा की है कि उसने 2024 में कुल 216-500 नए पेड़ लगाए हैं, जो पिछले वर्ष की तुलना में 17% की वृद्धि दर्शाता है। इस उपलब्धि का मतलब है कि औसतन प्रतिदिन 600 पेड़ लगाए गए[2]।

सऊदी अरब की मिडिल ईस्ट ग्रीन इनिशिएटिव के अंतर्गत वर्ष 2021 से 2024 के बीच 100 मिलियन से अधिक पेड़ों और झाड़ियों का रोपण किया गया है[3]। इसके परिणामस्वरूप मरुस्थलीय क्षेत्र भी क्रमशः हरित होते जा रहे हैं। यह उदाहरण दर्शाता है कि विश्व स्तर पर, यद्यपि कॉरपोरेट गतिविधियों के कारण प्रकृति का व्यापक क्षरण हो रहा है, फिर भी चीन जैसे बड़े देश तथा अन्य राष्ट्र पर्यावरण संरक्षण को गंभीरता से महत्व दे रहे हैं। इसी प्रकार भारत ने भी पर्यावरण संरक्षण और वनों के संवर्धन के लिए अनेक योजनाएँ और कार्यक्रम लागू किए हैं।

तत्कालीन वैश्विक पर्यावरणीय संदर्भ में, जब पर्यावरण संरक्षण को लेकर विश्वभर में आवाज़ उठाई जा रही थी, भारत में 17 दिसंबर 2021 को एक बड़े बजट की फिल्म 'पुष्पा: द राइज़' प्रदर्शित हुई। यह तेलुगु भाषा की फिल्म मलयालम, तमिल, कन्नड़ और हिन्दी भाषाओं में भी रिलीज़ की गई तथा इसे 'पैन–इंडिया' सिनेमा के रूप में व्यापक स्तर पर प्रचारित किया गया। लगभग 150-200 करोड़ रुपये के बजट में निर्मित इस फिल्म ने लगभग 350 करोड़ रुपये का व्यवसाय किया। इसके अतिरिक्त, इसके मुख्य अभिनेता को वर्ष 2023 में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्रदान किया गया। इस प्रकार यह फिल्म न केवल व्यावसायिक दृष्टि से अत्यंत सफल रही, बल्कि इसे राज्य और सरकार की ओर से औपचारिक एवं वैध स्वीकृति भी प्राप्त हुई ।

यहीं एक महत्वपूर्ण प्रश्न उभरता है। राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान कर भारत सरकार की जूरी ने वस्तुतः इस फिल्म और उसकी वैचारिक संरचना को स्वीकार किया है। प्रश्न यह है कि इस फिल्म की कथा–वस्तु क्या संदेश देती है। 'पुष्पा: द राइज़' की कहानी मूलतः एक लाल चंदन माफिया के उदय को महिमामंडित करती है। फिल्म का नायक एक गरीब युवक है, जिसका सामाजिक स्थान अत्यंत निम्न बताया गया है। वह चतुर, साहसी और निर्भीक है तथा सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए अवैध गतिविधियों में संलग्न होता है।

फिल्म में यह दर्शाया गया है कि भारत के कुछ वनों में पाए जाने वाला लाल चंदन विश्वभर में अत्यधिक मांग वाली और विलासितापूर्ण लकड़ी है। कानूनी रूप से इसके कटान और व्यापार पर प्रतिबंध है, फिर भी नायक पुष्पा राज इस अवैध लकड़ी की तस्करी कर विदेशी बाज़ारों तक पहुँचाता है। फिल्म की संरचना में उसे नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जबकि उसे पकड़ने वाली पुलिस को खलनायक के रूप में चित्रित किया गया है।

जब एक ओर विश्व–स्तर पर वनों और वृक्षों के संरक्षण के लिए अभियान चलाए जा रहे हैं, तब दूसरी ओर इस प्रकार की फिल्म को सामाजिक–सांस्कृतिक स्वीकृति और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिलना एक गहरे विरोधाभास की ओर संकेत करता है। यह स्थिति भारतीय पर्यावरणीय कानूनों, विशेषकर वृक्षों के कटान और

वन संरक्षण से संबंधित विधानों की वैचारिक संगति पर भी प्रश्नचिह्न खड़ा करती है।

भारत में लाल चंदन की कटाई कानूनी दृष्टि से एक गंभीर अपराध है। इसका मुख्य कारण यह है कि लाल चंदन कोई सामान्य अथवा सर्वत्र उपलब्ध वृक्ष नहीं है, बल्कि यह अनेक आयुर्वेदिक और औषधीय गुणों से युक्त एक दुर्लभ प्राकृतिक संपदा है। लाल चंदन (रेड सैंडलवुड) को इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (IUCN) की रेड लिस्ट में पुनः 'लुप्तप्राय' श्रेणी में शामिल किया गया है। यह प्रजाति प्टेरोकार्पस सैंटालिनस (Pterocarpus santalinus) भारत में पाई जाने वाली एक स्थानिक वृक्ष प्रजाति है, जिसका भौगोलिक विस्तार पूर्वी घाट तक ही सीमित है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2018 में इस प्रजाति को 'संकट के निकट' (Near Threatened) श्रेणी में वर्गीकृत किया गया था[4]।

डाउन टु एर्थ के 10 जनवरी 2022 के अंक के लेख के अनुसार आंध्र प्रदेश के एक विशिष्ट वन क्षेत्र में ही पाए जाने वाले प्रजाति है। इसे 2018 में 'संकट के निकट' श्रेणी में रखा गया था और अब 2021 में इसे एक बार फिर 'संकटग्रस्त' प्रजातियों की सूची में शामिल कर लिया गया है। पहले 1997 के बाद इस प्रजाति को पहली बार लुप्तप्राय श्रेणी से बाहर निकाला गया[5]।

आईयूसीएन के नवीनतम मूल्यांकन में कहा गया है कि "पिछली तीन पीढ़ियों के दौरान इस प्रजाति की आबादी में 50–80 प्रतिशत तक की गिरावट दर्ज की गई है। इसलिए इसे लुप्तप्राय प्रजाति के रूप में मूल्यांकित किया गया है[6]।" इसके अतिरिक्त, MOEFCC के एक ट्वीट में यह उल्लेख किया गया है कि "अत्यधिक दोहन के कारण इस प्रजाति की संख्या अपने प्राकृतिक आवास में लगातार घटती जा रही है। आईयूसीएन के मानदंडों के अनुसार इसे लुप्तप्राय घोषित किया गया है तथा इसे सीआईटीईएस (CITES) के परिशिष्ट–II और वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत भी सूचीबद्ध किया गया है[7]।"

इसी कारण भारत सरकार ने इसके कटान, परिवहन और व्यापार पर कठोर कानूनी प्रतिबंध लगाए हैं। इसके बावजूद, फिल्म 'पुष्पा : द राइज़' में लाल चंदन की अवैध कटाई और उसकी तस्करी को नायकत्व से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है। फिल्म में इन गतिविधियों को नाटकीय और वीरतापूर्ण संगीत के साथ दिखाया जाता है, जिससे यह अवैध कृत्य दर्शकों के सामने आकर्षक और स्वीकार्य प्रतीत होते हैं। यह तर्क दिया जा सकता है कि सिनेमा को केवल मनोरंजन के दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए, किंतु समस्या यह है कि फिल्म में चित्रित लाल चंदन की तस्करी और वनों की कटाई कोई काल्पनिक घटना नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज का एक कटु यथार्थ है।

वास्तविक जीवन में लाल चंदन की तस्करी से जुड़े अनेक मामले सामने आते रहे हैं। आंध्र प्रदेश और कर्नाटक के सीमावर्ती वन क्षेत्रों में तस्करी के दौरान हिंसक घटनाएँ, वनकर्मियों और पुलिस पर हमले, तथा अंतरराष्ट्रीय तस्करी नेटवर्क के खुलासे समय–समय पर समाचारों में दर्ज होते रहे हैं। 'डाउन टु एर्थ' के 2 फरवरी 2023 प्रकाशित आर्टिकिल के अनुसार वन्य जीवों और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर सम्मेलन (CITES) ने लाल चंदन की लकड़ियों की 28 ज़ब्ती और कुर्की की घटनाओं को दर्ज किया है, जिनमें 19,049 टन से अधिक लकड़ियाँ शामिल हैं[8]। और 2 फरवरी, 2023 को TRAFFIC और WWF- भारत द्वारा जारी किए गए दस्तावेज़ में बताया गया है कि 53.3 प्रतिशत लकड़ियां चीन को भेजी जाती हैं, जिससे यह अवैध रूप से काटी गई लाल चंदन की लकड़ियों का सबसे बड़ा आयातक बन जाता है[9]। लेख में यह भी बताया गया है कि लाल चंदन की भीतरी लकड़ी की घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में काफी मांग है, जिसका उपयोग चीन और जापान में फर्नीचर, हस्तशिल्प और संगीत वाद्ययंत्र बनाने में किया जाता है। इस लकड़ी से प्राप्त लाल रंग का उपयोग वस्त्र, औषधि और खाद्य उद्योगों में रंगाई एजेंट के रूप में किया जाता है।

सिनेमा में भी ठीक यही स्थिति दिखाई गई है। फिल्म में जापान में होने वाले एक विवाह का दृश्य प्रस्तुत किया गया है, जहाँ यह बताया जाता है कि वहाँ की संस्कृति के अनुसार दूल्हा अपनी दुल्हन को एक महँगा उपहार देता है। इस दृश्य में दूल्हा अपनी दुल्हन को जापानी वाद्य यंत्र भेंट करता है, जो लाल चंदन से निर्मित होता है। यह भी संकेत दिया गया है कि यह लाल चंदन भारत से चीन और वहाँ से जापान तक तस्करी के माध्यम से पहुँचाया जाता है।

समस्या इस यथार्थ के चित्रण में नहीं है, बल्कि इस तथ्य में निहित है कि फिल्म इस अवैध रूप से लाल चंदन काटने और उसकी तस्करी करने वाले पुष्पा के साहस और चतुराई को नायकत्व प्रदान करती है। इस प्रकार, फिल्म दर्शकों के सामने यथार्थ को प्रश्नांकित करने के बजाय उसे अवैध होकर भी स्वीकार्य रूप में प्रस्तुत करती है। इस संदर्भ में सिनेमा द्वारा इस यथार्थ को आलोचनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करने के बजाय उसे महिमामंडित करना एक गंभीर वैचारिक समस्या उत्पन्न करता है। समस्या केवल अवैध गतिविधियों के चित्रण तक सीमित नहीं है, बल्कि उन गतिविधियों में संलग्न पात्र को नायक का दर्जा दिया जाना इस संकट को और गहरा करता है। जब एक अपराधी चरित्र सामाजिक प्रतिष्ठा, साहस और सफलता का प्रतीक बनकर उभरता है, तब यह दर्शकों के मूल्यबोध को प्रभावित करता है।

यहाँ यह प्रश्न भी प्रासंगिक हो जाता है कि यदि सिनेमा को पूर्ण रचनात्मक स्वतंत्रता दी जाती है, तो फिर 'पद्मावत' जैसी फिल्मों में धार्मिक आस्थाओं, ऐतिहासिक व्याख्याओं अथवा नायिका के वस्त्रों को लेकर व्यापक विरोध और संशोधन की माँग क्यों उठी। जब सांस्कृतिक या धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचने की आशंका होती है, तब समाज मुखर विरोध करता है; किंतु जब प्रकृति, वन और पर्यावरण को क्षति पहुँचाने वाले कृत्यों का महिमामंडन किया जाता है, तब उसके विरुद्ध वैसी सामूहिक आवाज़ क्यों नहीं उठती—यह एक विचारणीय प्रश्न है।

यदि इस फिल्म में पुष्पा के चरित्र को खलनायक के रूप में प्रस्तुत किया गया होता और उस भूमिका के लिए अभिनेता को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार प्रदान किया गया होता, तो यह स्वीकार्य होता। ऐसी स्थिति में फिल्म वास्तविक परिस्थितियों का यथार्थपरक उद्घाटन करती तथा अवैध गतिविधियों के विरुद्ध संघर्ष कर रही पुलिस की भूमिका को भी मान्यता देती। तब फिल्म का सामाजिक और नैतिक मूल्य भी स्थापित होता। किंतु यहाँ स्थिति इसके ठीक विपरीत है।

यदि यह फिल्म स्वयं को यथार्थ का सच्चा चित्रण बताती है, तो यह बात भी स्वीकार करनी होगी कि फिल्म में दिखाई गई अवैध गतिविधियाँ एक विधायक या मंत्री की सहमति से ही हो रही हैं। इस प्रकार की तस्करी राजनीतिक दलों और सत्ता में बैठे लोगों के संरक्षण के बिना संभव नहीं होती। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि कानून व्यवहार में केवल काग़ज़ों तक सीमित रह जाता है, जबकि वास्तविक शक्ति धन के हाथों में केंद्रित होती है।

यह फिल्म एक पुरुषसत्तात्मक चिंतन से उद्भूत प्रतीत होती है। इसमें नायिका, नायक की माँ तथा अन्य स्त्री पात्रों को पुरुषप्रधान समाज के दबाव में जीवन जीने वाले, असहाय और हाशिए पर स्थित चरित्रों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ये पात्र अपनी स्वतंत्र पहचान और निर्णय–क्षमता से वंचित दिखाई देते हैं तथा पुरुष वर्चस्व के अधीन जीवन व्यतीत करते हैं। इसके अतिरिक्त, फिल्म में स्त्री को एक यौनिक दृष्टिकोण (Sexual gaze) से देखने वाली सामाजिक मानसिकता का भी चित्रण किया गया है, जो स्त्री की मानवीय गरिमा और सामाजिक भूमिका को सीमित कर देती है।

इस संदर्भ में स्त्री और प्रकृति—दोनों को ही शोषण का शिकार दिखाया गया है। पुरुषसत्तात्मक अधिकार–बोध और प्रभुत्व की भ्रांति के अंतर्गत प्रकृति का दोहन किया जाता है, जिससे उसका मूक क्रंदन उभरकर सामने आता है। इस दृष्टि से यह फिल्म प्रत्येक पर्यावरणविद् के लिए एक गंभीर चेतावनी और चिंतन का विषय बन जाती है।

निष्कर्ष

वर्तमान वैश्विक संदर्भ में प्रकृति का संरक्षण अनिवार्य सिद्ध हो चुका है, और इसे हर प्रकार से सुरक्षित रखना प्रत्येक नागरिक का नैतिक तथा सामाजिक दायित्व है। लाल चंदन जैसे दुर्लभ वृक्षों और अन्य प्राकृतिक संसाधनों के दोहन एवं तस्करी को रोकने के लिए मौजूदा कानूनों को और अधिक सशक्त बनाए जाने की आवश्यकता है। 'पुष्पा' जैसी फिल्मों को केवल मनोरंजन के दृष्टिकोण से न देखकर, उनमें प्रस्तुत तस्करी जैसे गंभीर विषयों को कानूनी और सामाजिक विमर्श के माध्यम से जिम्मेदारी पूर्वक संबोधित किया जाना चाहिए।

निस्संदेह, फिल्म में नायक की भूमिका निभाने वाले अभिनेता का अभिनय प्रभावशाली है; किंतु पुरस्कार प्रदान करते समय फिल्म की कथावस्तु और नायकत्व के सामाजिक–पर्यावरणीय संदर्भ पर आलोचनात्मक दृष्टि अपनाई जाती, तो यह अधिक संतुलित और उपयुक्त होता। इसके अतिरिक्त, फिल्म का दूसरा भाग रिलीज़ हो चुका है और तीसरे भाग की भी घोषणा की गई है। ऐसे में तस्करी से जुड़े नायकत्व की छवि के निरंतर महिमामंडन पर एक नैतिक और वैचारिक विराम आवश्यक प्रतीत होता है। अन्यथा, आर्थिक सफलता की आकांक्षा रखने वाले अनेक युवाओं पर इस प्रकार के नायकत्व का नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

यद्यपि सृजनात्मक स्वतंत्रता अत्यंत आवश्यक है, तथापि सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ इसका संतुलन बनाए रखना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। ऐसे विषयों को प्रस्तुत करते समय अपराध को नायकत्व के रूप में नहीं, बल्कि खलनायकत्व के रूप में चित्रित कर, कलाकार की अभिनय क्षमता को उजागर किया जाना अधिक न्यायसंगत और सामाजिक रूप से उत्तरदायी दृष्टिकोण होगा।

संदर्भ सूची

1. United Arab Emirates ministry of industry and advanced technology, "Ghaf Tree Planting Initiative, moiat.gov.ae 26/11/2024
2. Dubai Municipality, 216,500 trees Planted in 2024 to enhance Sustainability. 27 जानवरी 2025, https://www.dm.gov.ae
3. Sgi.gov.sa
4. सुचिता झा, "Red Sanders falls back in IUCN's 'endangered' category", Down To Earth, 2022 जानवरी –10
5. वहीं
6. वहीं
7. वहीं
8. सुचिता झा, "About 20,000 tonnes of Red Sanders were smuggled from india between 2016 and 2020: Report. 2023 फरवरी –2
9. वहीं